Journal of Advances in Developmental Research (IJAIDR)
E-ISSN: 0976-4844 ● Website: www.ijaidr.com ● Email: editor@ijaidr.com

प्रौद्योगिकी विकास का हिन्दी साहित्य पर प्रभाव

डॉ रेखा मिश्रा

विषय- हिंदी, राजकीय महाविद्यालय निवाई (टोंक)

पृथ्वी पर जबसे मानव अस्तित्व में आया है,उसने निरन्तर अपने लिये उत्तम साधनों व उत्तम व्यवस्थाओं के विकास का प्रयास किया है। इन्हीं प्रयासों की देन है विज्ञान प्रौद्योगिकी का विकास। तकनीक के विकास ने मानव जीवन के ढांचे को आमूलचूल बदल दिया। विज्ञान के माध्यम से सम्पूर्ण विश्व के सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए जिन्होंने मनुष्य को क्रांति के युग में लाकर खड़ा कर दिया। आज भी विज्ञान प्रौद्योगिकी विकास के कारण मानव की दुनिया में निरन्तर परिवर्तन होता जा रहा है। इन परिवर्तनों का प्रभाव भारत पर भी बहुत हुआ है जिसे मानव से सबंधित प्रत्येक क्षेत्र में देखा जा सकता है।

आज के युग में विज्ञान उन्नति की चरम सीमा पर है। आज का वैज्ञानिक ईश्वर के अस्तिव को मानव-मन की दुर्बलता स्वीकार करता है। आज वह प्राचीन भारतीय सस्कृति का परिहास उडाने में गौरव का अनुभव कर रहा है. आज वह प्रकृति से भयभीत नहीं होता, उसे अपनी अनुचरी और सहचरी समझता है। प्रकृति के पांचों तत्वों पृथ्वी, जल. अग्नि, वायु और आकाश पर आज उसका पूर्ण अधिकार है। चन्द्रमा और मंगल आदि ग्रहों पर आज वह नया संसार बसाने को आतुर हो रहा है. चाहे उसके बदले में उसे इस संसार का बलिदान करना पड़े। संसार के महान देश आज विनाशकारी अस्त्रों के निर्माण में गौरव का अनुभव कर रहे हैं। विज्ञान ने मानव जाति के लिये अनन्त सुख सुविधाएं प्रदान की हैं। कोई भी व्यक्ति विज्ञान द्वारा आविष्कृत साधनों की उपेक्षा नहीं कर सकता। राष्ट्रीय भावनाओं के कवि दिनकर ने लिखा है-

आज की दुनिया विचित्र, नवीन,
प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरूष आसीन।
हैं बंधे नर के करों में वारि, विद्युत, भाप,
हुक्म परचढ़ता उतरता है पवन का ताप.
है नहीं बाकी कहीं व्यवधान,
लांघ सकता नर, सरित गिरी सिन्धु एक समान ।।

समाज में इस बदलाव को लाने में यातायात तथा दूरसंचार माध्यमों का विशेष हाथ है। बड़े-बड़े नगरों में सुविधाएं आसानी से उपलब्ध होने के कारण उद्योग अथवा व्यापारिक कार्य यहीं पर केन्द्रित होते चले जा रहे हैं। इसके अलावा आज सड़क मार्ग द्वारा जहां ग्रामीण क्षेत्रों का सम्पर्क महानगरों से संभव हुआ है, वहीं रेलमार्गों ने सस्ते एवं तीव्र गति से चलने वाले यातायात के साधन उपलब्ध कराए हैं। तेज गति के यातायात साधनों की उपलब्धता के कारण लोग बड़े-बड़े नगरों की ओर इन सेवाओं को प्राप्त करने के लिए पलायन करने लगते हैं। नगरों में विनिमय एवं व्यापार की सुविधा भी ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में कई गुना अधिक होती है। नगरों में व्यवसाय के अनेक द्वार खुले होने के कारण क्षेत्रों से आने वाले लोगों को कोई न कोई व्यवसाय मिल ही जाता है।

यद्यपि अग्रेजों के द्वारा इन माध्यमों को उनके स्वयं के व्यापारिक हितों के कारण आरंभ किया गया था किंतु भारतीय प्रजा को इनसे लाभ ही पहुंचा। विस्तृत भारत के लोगों ने उत्तर से दक्षिण को जुड़ते देखा और सम्पूर्ण भारत राष्ट्रीय आन्दोलन हेतु एक जुट हो सका। विज्ञान प्रौद्योगिकी के कारण ही मनुष्य ने प्राकृतिक शक्तियों को नियंत्रित कर अपने उपयोग में लेना प्रारंभ किया। बांध बनाना, पर्वतों को काट कर सुरंग बनाना, सड़कें बनाना, विद्युत का आविष्कार, रसोई गैस का उपयोग और भी न जाने कितने ऐसे साधन विकसित हुए जिन्होंने भारतीय समाज के प्रत्येक आम जन तक को प्रभावित किया तथा उनकी जीवन शैली में परिवर्तन किया। विज्ञान के विकास ने धरती का उपजाऊपन बढ़ाने में भी अपना महती योगदान दिया और हरित क्रांति अस्तित्व में आई। मशीनें बनने से सभी कार्य शीघ्रता से होने लगे और बहुत से व्यवसायों ने उद्योगों का रूप ग्रहण कर लिया।

विज्ञान के कारण मशीनों के प्रयोग से औद्योगिकीकरण आरंभ हुआ तथा वस्तुओं की गुणवत्ता बढ़ने लगी। उद्योगों के विकास के साथ ही नगरों का विकास आरंभ हुआ और इसी के साथ मानव के जीवन में भौतिक सुखों की लालसा ने जन्म लिया। विज्ञान द्वारा मिली सुख सुविधाओं के बीच वह अधिक समय तक रहना चाहता था व स्वस्थ रहना चाहता था और इसी के साथ चिकित्सा के क्षेत्र में क्रांति होने लगी। मृत्यु का कारण माने जाने वाले रोगों से मनुज का युद्ध आरंभ हुआ और विज्ञान की सहायता से कई असाध्य रोगों की कारगर दवायें भी खोज ली गई। परिणामतः मृत्यु दर में गिरावट आई। अब मनुष्य अधिक समय तक स्वस्थ बना रह कर विज्ञान से प्राप्त सुखों का उपभोग कर सकता था और यही हुआ। मानव ने भौतिक सुखों की तलाश में भागना शुरु कर दिया और इस प्रकार भौतिकतावाद को बढ़ावा मिला। यदि सतही तौर पर देखा जाये तो प्रतीत होता है कि विज्ञान प्रौद्योगिकी के विकास से मनुष्य का जीवन सुखमय हो गया चूंकि उसे सुख सुविधा के साधन मिले, उसके कार्य त्वरित गति से होने लगे और उत्पादन ज्यादा बढ़ने से उसका पारिश्रमिक बढ़ गया तथा वैज्ञानिक उन्नति के साथ ही वह मृत्यु पर विजय पाने की आकांक्षा तक रखने लगा। किन्तु गहराई से अध्ययन किया जाये तो यह सब नहीं है। विज्ञान प्रौद्योगिकी के विकास से मनुष्य के जीवन पर अच्छा प्रभाव ही पड़ा हो ऐसा नहीं है. मनुष्य व समाज पर इसके दुष्प्रभाव भी पड़े जिन्हें हम निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से देख सकते हैं -

1. **स्वास्थ्य पर प्रभाव** - विज्ञान प्रौद्योगिकी के कारण अस्तित्व में आये अनेक यंत्रों ने मनुष्य के स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ किया है। मनुष्य के शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य पर दृश्य-श्रव्य माध्यमों व कीटनाशकों तथा वाहनों का बहुत बुरा प्रभाव पड़ा। खाद्य प्रदूषण ध्वनि जल व वायु प्रदूषण ने अनेक शारीरिक व मानसिक रोगों को जन्म दिया तथा दृश्य श्रव्य माध्यमों ने बड़ों के साथ-साथ बालकों के विकास पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाला।

2. **सामाजिक संस्थाओं पर प्रभाव-** भारतीय समाज के मूल आधारों में संयुक्त परिवार प्रथा का महत्वपूर्ण स्थान है, जिस में तीन पीढ़ियों से ज्यादा पीढ़ियां एक साथ रहती हैं। मिल जुल कर कार्य करना. बडों को सम्मान, बालकों का उचित पालन पोषण, अनुशासन, सांमजस्य जैसे गुण, प्रेम उदारता जैसे भाव अनायास ही ऐसे परिवारों के माध्यम से मनुष्य के अन्दर समाविष्ट हो जाते थे। किंतु विज्ञान प्रौद्योगिकी के विकास ने सबसे अधिक जिस सामाजिक संस्था को हानि पहुंचाई वह संयुक्त परिवार ही है। औद्योगीकरण होने के कारण परिवार के सदस्यों का नौकरी हेतु दूर प्रदेशों में जाना, मशीनीकरण के कारण परिवार के कार्यों का घट जाना, भौतिक सुख सुविधाओं की लालसा के कारण परिवारजनों में एक दूसरे के प्रति शंका वैमनस्य पैदा होने से संयुक्त परिवारों का विलोप आरंभ हो गया जिसका दुष्परिणाम हमें वृद्धों की असहायता तथा बालकों की असुरक्षा के रूप में दिखाई दे रहा है।

संयुक्त परिवार के साथ ही जिस अन्य सामाजिक संस्था पर सबसे ज्यादा चोट पहुंची है वह है विवाह संस्था। चूंकि औद्योगीकरण नगरीकरण के इस युग में हर युवा भौतिक सुखों की लालरस में व्यक्तिगत रूप से जुटा रहना चाहता है और अपने आप को चोटी की ऊंचाई तक देखना चाहता है। इसी इच्छा की पूर्ति के कारण युवाओं द्वारा पहले तो विवाह ही 30 वर्ष की आयु तक किया जाता है साथ ही यह इच्छा भी की जाती है कि उनका जीवनसाथी भी नौकरीपेशा हो ताकि दोनों मिलकर अधिक से अधिक भौतिक साधन प्राप्त कर सकें। उनकी इस धारणा के परिणामस्वरूप हमें देखने को मिलता है एक भौतिकतावादी जीवन जिसमें मानसिक असुरक्षा है. एक ऐसा घर जिसमे बालक माता-पिता के प्यार से वंचित है. बड़ी आयु में विवाह होने से विचारों में टकराव और विवाह विच्छेद के मामलों का अम्बार।

3 **सामाजिक संबंधों का प्रभाव -** विज्ञान प्रौद्योगिकी के विकास के साथ साथ मनुष्य का ध्यान आध्यात्मिकता से हटकर भीतिकतावाद पर लगने लगा जिसके लिये सबसे ज्यादा उत्तरदायी कहे जा सकते हैं- दृश्य श्रव्य माध्यम जिन्होंने उपभोक्तावाद व लुभावने विज्ञापनों द्वारा मनुष्य को कल्पना के संसार में पहुंचा दिया। इन माध्यमों ने एक कल्पित दुनिया का सृजन किया जिसने मनुष्य को यथार्थ की दुनिया से अलग कर दिया। दूरदर्शन ने हर घर में घुसपैठ कर ली और घर के सदस्यों को समाज के अन्य सदस्यों से अलग कर दिया। दूरदर्शन क्रांति से पहले होने वाली चौपाले अब कल्पनातीत हो गई। पडोसन, देवरानी-जिठानी आदि की आपसी बातचीत अब दूरदर्शन व उसके सास बहू के धारावाहिकों के सामने सिमट गई हैं। आपसी बातचीत व गपशप जहां मनुष्य के मस्तिष्क को हल्का करने, दैनिक जीवन के समाधान जुटाने में सहायता करती थी, अब धारावाहिकों की कल्पित कहानियां शंका व वैमनस्य के साथ-साथ मानसिक कुंठाएं उत्पन्न करने लगी है. सामाजिकता का हनन करने लगी हैं। मानवीय संबंधों में औपचारिकता का समावेश तथा संवेदनाओं का खात्मा होने लगा है।

विविध सामाजिक समस्याओं का प्रादुर्भाव विज्ञान व तकनीकी विकास के परिणामों ने मनुष्य को वरदान व सुविधाएं ही प्रदान की हो ऐसा नहीं हैं अपितु औद्योगिकीकरण, नगरीकरण जैसे परिणामों ने कई समस्याओं को भी जन्म दिया जो समाज पर न केवल आर्थिक वरन सामाजिक प्रभाव भी डालने वाली है।

उद्योगों ने उद्योगपतियों को जन्म दिया जो पूंजीपतियों में बदल गये और समाज का एक बढ़ा वर्ग कामगार वर्ग में आ गया। कुटीर उद्योग तकनीकी प्रगति वाले उद्योगों के सामने नहीं टिक सके और उद्योगों में मशीनों के प्रयोग से ज्यादा मजदूरों की आवश्यकता नहीं रही जिससे बेकारी की समस्या पैदा हुई। यदि समाज में बेराजगारी होगी तो जाहिर है अपराध, हिंसा लूटपाट, भुखमरी, भिखारीपन, आवारगी, छात्र असतोष जैसी समस्याएं जन्म लेती है जो किसी भी समाज पर कलंक है।

4.**सूचना प्रौद्योगिकी का भाषा पर प्रभाव-** सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आज जो नये ज्ञान विस्फोट हुआ है वह भाषा में भी क्रान्ति का वाहक बनकर आया है। जिससे भाषा के कलेवर और उसकी आतरिक क्षमता में भी एक विस्फोट की स्थिति पैदा हो चुकी है। अभी तक भाषा को मनुष्य की आवश्यकताओं को ही पूरा करना पड़ता था, लेकिन आज इसे न केवल मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करना पड रहा है बल्कि मशीन और कम्प्यूटर से नित नई भाषाई मांगों को पूरा करना पड़ रहा है। कम्प्यूटर और सूचना टेक्नोलॉजी ने सारा परिदृश्य बदल दिया है। आज का औद्योगिक समाज सूचना समाज में बदल चुका है। वैश्वीकरण का केन्द्रीय तत्व ही है- सूचना और ज्ञान का वैश्वीकरण और अधिक से अधिक टेक्नोलॉजी आश्रित कार्यक्रमों का विकास। वैश्वीकरण के इस युग में टेक्नोलॉजी ने भाषा को वायुमण्डल की ऊँचाईयों तक इंटरनेट के जरिए पहुंचा दिया है। टेक्नोलॉजी आधारित समाज की भाषा भी इससे अछूती नहीं रह पा रही है। ऐसे में अपरिहार्य हो गया है कि बाजारवादी व्यवस्था का समुचित नियमन और

प्रबन्धन किया जाये जिससे भाषा की छवि और उसकी आत्मा को आघात न पहुंचे और भाषा की संस्कृति दूषित होने से बची रहे।

एक ओर विज्ञान ने जहां हमें जीवनयापन के लिए अत्यन्त सुख-सुविधाएं प्रदान की हैं, वहां दूसरी ओर मानवता भयग्रस्त हो रही है। विज्ञान ने मनुष्य से मनुष्यता छीन ली और उसे दानव बना दिया। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का वह भारतीय पुरातन आदर्श आज प्राय लुप्त-सा दृष्टिगोचर हो रहा है। ससार अपने-अपने स्वार्थों में व्यस्त है. प्रत्येक राष्ट्र अपना ही चिन्तन करता है, न उसकी पड़ोसी देशों के साथ कोई सहानुभूति है और न संवेदना। विश्व के महान देश आज अपनी-अपनी वैज्ञानिक उपलब्धियों के आधर पर एक-दूसरे के विनाश के लिए कटिबद्ध है। विश्व के मानव मात्र को सावधान करते हुए दिनकर लिखते हैं-

सावधान मनुष्य!
यदि विज्ञान है तलवार
तो इसे दे फेंक तजकर मोह स्मृति के पार।
हो चुका है सिद्ध
है तू शिशु अभी अज्ञान,
फूल कांटों की तुझे कुछ भी नहीं पहचान।
खेल सकता तू नहीं ले हाथ में तलवार
काट लेगा अंग, तीखी है बड़ी यह धार।।

निष्कर्षत कहा जा सकता है कि विज्ञान व तकनीक के विकास ने मानव समाज को नकारात्मक व सकारात्मक दोनों रूपों में प्रभावित किया है। कोई भी परिवर्तन अथवा विकास जब होता है तो वह किसी एक सीधी रेखा में न होकर अनेक शाखाओं के रूप में होता है। विज्ञान भी इसी तरह मनुष्य के जीवन में आया। अब यदि हम चाहे तो इसके माध्यम से टी बी कैंसर एड्स जैसे रोगों से लड़ने की क्षमता का विकास करें और यदि हम चाहें तो जहरीली गैसों और बमों का निर्माण कर मानव जीवन में तबाही ला दें। यदि मानव चाहें तो कृत्रिम उपग्रहों से मौसम की पूर्व जानकारी लेकर सुनामी व भूकम्प जैसे प्राकृतिक प्रकोपों से मानव प्रजाति को बचाएं और चाहें तो दूसरे देशों पर जासूसी कर उन पर हमला कर विश्व में दादागिरी जताएं। यह कहना कि विज्ञान व तकनीक के विकास ने भारतीय समाज उसकी परम्पराओं, संस्थाओं, मान्यताओं, विचारधाराओं, मूल्यों पर कुठाराघात किया है, गलत होगा। वास्तव में परिवर्तन प्रकृति का नियम है। इतना अवश्य है कि इस युग में परिवर्तन का माध्यम विज्ञान तथा तकनीक बने हैं। परिवर्तन के इस काल में वही मान्यताएं, संस्थाएं व धारणाएं स्थापित होंगी व अस्तित्व में रह पायेंगी जो मजबूत जड़ों वाली होगी तथा समय के साथ अपने को परिवर्तित कर पायेंगी। यह संक्रमण काल है जिस समय विज्ञान तकनीक का विकास अपने चरम पर है और भारतीय समाज की परम्पराओं व संस्थाओं की दृढ़ता कसौटी पर है। आने वाले कुछ दशक यह बताने में समक्ष होंगे कि विज्ञान और तकनीक तथा भारतीय सामाजिक परम्पराओं में क्या संबंध बनता है।

संदर्भ ग्रंथ -

1.भारतीय सामाजिक संस्थाएं - मोती लाल गुप्ता
2. प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास - जयशंकर मिश्र
3. हिन्दुस्तान के निवासियों का जीवन व उनकी परिस्थितियां - के. एम अशरफ

4. वैज्ञानिक तकनीकी क्रांति और उत्तर औद्योगिक समाज - अनिल राजिमवाले
5. Changing Indian Society: Dr. K.L. Sharma
6. Television and social transformation A study in mass com-munication Y. Ravindra Nath Rao Sociological Bulletin Vol. 52, No. 2 Sep. 2003.
7. दि डिस्कवरी ऑफ इण्डिया - जवाहर लाल नेहरू, लन्दन, 1956
8. भारत के मध्यवर्ग की अजीब दास्तान - पवन कुमार वर्मा
9. राजभाषा भारती, जन-मार्च 2005